देहधारण–ख्रीस्त जयंती का मर्म

देहधारणः सबका प्रभु भाग – 4

डॉ. डेविड प्लॉट

नमस्कार! यदि आपके पास बाइबल हो तो कृपया फिलिप्पियों अध्याय 2 खोल लें।

हम ख्रीस्त जयंती के दिन नाना प्रकार के निर्णय लेते हैं। मुझे स्मरण है कि बहुत समय पहले जब मैं बालक ही था। उस समय मेरे बड़े भाई और मेरा यह अभ्यास था कि ख्रीस्त जयंती के दिन भोर के समय माता–पिता के जागने से पूर्व नीचे जाकर देखें कि हमारे लिए वहां क्या है। उस दिन घर में सब संबन्धी चाचा–चाची, मामा–मामी, दादा–दादी आदि सब आए हुए थे। मैं माता–पिता के कमरे में फर्श पर सो रहा था। मां ने पहले ही चेतावनी दे दी थी कि इस बार अभ्यास के अनुसार मुझे अति शीघ्र जागने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि अतिथिगण वहां हैं। अतः मुझे 7 या 8 बजे तक सोते रहना है, अन्यथा मुझे उपहार नहीं मिलेंगे। और उन्होंने मुझे स्लीपिंग बैग में डालकर सुला दिया। अब उत्साह ऐसा उबल रहा था कि सोना असंभव था। आप भोर की प्रतीक्षा करते रहते हैं। इसी बीच मुझे शौचालय जाने की आवश्यकता पड़ी परन्तु मां की चेतावनी का स्मरण आया कि यदि मैं उठा तो उपहार से वंचित हो जाऊंगा। अब मैं परेशान था। मेरे पास दो विकल्प थे, एक तो यह कि उठकर दबे पांव शौचालय हो आऊं। दूसरा, आप समझते हैं क्या है, मैं दुविधा में पड़ गया।

अब मैं आपका मत चाहता हूं यदि आप मेरे स्थान में होते तो आपमें से कितने पहला विकल्प अपनाते कि दबे पांव शौचालय जाते? और कितने दूसरा विकल्प अपनाते? मेरे विचार में, सब बच्चे हाथ उठाएंगे!

आप जानते हैं, मैं ने क्या किया? मैं जब तक रोक सका मैं ने रोका परन्तु जब वश के बाहर हो गया तो मैं ने बैग में ही कर दिया। सुबह जब माता–पिता आए तो पूछने लगे, "तुम्हारे स्लीपिंग बैग को क्या हुआ?" मैं ने कहा, "इसकी मुझे चिन्ता नहीं। मेरा उपहार तो मुझे मिलेगा!" हम ख्रीस्त जयंती के दिन अनेक निर्णय लेते हैं!

हमारी देहधारण श्रृंखला के इस अन्तिम अध्ययन में मैं चाहता हूं कि हम उस अन्तिम निर्णय का सामना करें जो ख्रीस्त जयंती हमारे सामने रखती है। यह हमारे जीवन के अन्य सब निर्णयों से अत्यधिक गंभीर और

महत्त्वपूर्ण है। यह ख्रीस्त जयंती की वास्तविकता के आमने–सामने है। इसे हम फिलिप्पियों 2:5–11 में देखेंगे।

"जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो; जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटने टेकें; और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।"

अब हम अन्तिम तीन पद 9–11 पर मनन करेंगे।

"इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटने टेकें; और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।"

"यीशु मसीह ही प्रभु है।" यह उद्घोषणा आरंभिक कलीसिया का केन्द्र थी। सर्वप्रथम मसीही प्रचार में पतरस ने खड़े होकर कहा– प्रेरितों के काम 2:36, "परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।" संपूर्ण नये नियम में यह मुख्य उद्घोषणा है कि यीशु ही मसीह है। नये नियम में 750 बार यीशु को प्रभु कहा गया है। मेरे विचार में यह देहधारण का मूल है। अतः हम इस पर विचार करेंगे। चरनी में पड़ा यह बालक एक दिन सब का प्रभु होगा। इसका अर्थ क्या है? मेरे विचार में आज "प्रभु" शब्द ने अपना अर्थ खो दिया है। हमारी मसीही शब्दावली में "प्रभु" का अर्थ क्या है? मैं नहीं चाहता कि यह शब्द हमारे लिए अर्थहीन हो या यीशु का अर्थहीन उपनाम हो। उसके प्रभु होने का अर्थ क्या है?

मैं चाहता हूं कि हम उसकी प्रभुता के चार परिप्रेक्ष्य देखें जो यहां फिलिप्पियों 2:9–11 में प्रकट हैं। वरन् संपूर्ण धर्मशास्त्र की गवाही में प्रकट है। पहला, वह सर्वोच्य स्थान में बैठकर राज करता है। इस कारण परमेश्वर ने उस को अति महान भी किया। मूल भाषा की बाइबल में यह वाक्यांश केवल यहीं काम में लिया गया है और इसका अर्थ है "सर्वश्रेष्ठ महानता" उसकी सर्वश्रेष्ठ महानता पर विशेष बल दिया गया है।

परमेश्वर ने उसे सर्वोच्य स्थान प्रदान किया और उसे सब नामों में श्रेष्ठ नाम दिया। आगे चलकर हम देखेंगे कि यीशु को "प्रभु" नाम दिया गया है।

आइए हम इस पर विचार करें। यीशु को अति महान किया। क्या इसका अर्थ यह हुआ कि वह देहधारण के बाद देहधारण पूर्व की अवस्था से अधिक महान किया गया? क्या वह क्रूस पर मरने के, पुनरुत्थान के और स्वर्गारोहण के बाद मानव रूप अपनाने से पूर्व से भी अधिक महान किया गया। वह परमेश्वर रूप में तो महान नहीं किया गया क्योंकि वह देहधारण से पूर्व और देहधारण पश्चात पूर्ण परमेश्वर ही था। यीशु का सत्व नहीं बदला था। तो फिर क्या बदला था? यीशु के पास स्वर्ग में अब ऐसी क्या स्थिति है जो पृथ्वी पर आने से पूर्व उसके पास नहीं थी। हमारे पिछले तीन अध्ययनों के आधार पर उत्तर स्पष्ट है। यह उसका मनुष्यत्व है। वह मानव रूप में जन्मा, मानव रूप में फिर जी उठा और मानव रूप में ही स्वर्ग में चला गया। उसकी मानवता अनन्त है। वह अनन्तकाल तक पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य रहेगा। इस प्रकार वह अति महान किया गया। अब इसके लिए हमें वही देखना है जो हम पिछले अध्ययनों में देखते आ रहे हैं–मसीह यीशु मनुष्य रूप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया। अध्याय 2 पद में वह मनुष्य की दीनता से परमेश्वर की महानता, परमेश्वर के सम्मान में आ गया है।

अब मैं चाहता हूं कि आप इसके यहूदी श्रोता के स्थान में खड़े हों जो पुराने नियम को जानता है। संपूर्ण पुराने नियम में परमेश्वर यहोवा ने स्वयं को "मैं हूं" कहकर प्रकट किया है। परमेश्वर की संपूर्ण वैभव, महानता, अनन्त गौरव इसी नाम में है। यूनानी भाषा की बाइबल –पुराने नियम– में परमेश्वर के लिए काम में लिया गया शब्द प्रभु है। पद 11 में अब यीशु को प्रभु कहकर सम्मानित किया गया है। इसका अर्थ पुराने नियम की संपूर्ण स्तुति जो सर्वोच्य परमेश्वर के लिए थी अब इस संदर्भ– फिलिप्पियों 2:11 के अनुसार प्रभु यीशु की है।

इस के अर्थ की गहराई में जाने के लिए हम प्रभु शब्द को पुराने नियम में देखेंगे जिससे कि आपको उस शब्द का अभिप्राय समझ में आ जाए। संभवतः फिलिप्पी के विश्वासी यूनानी भाषा के पुराने नियम से परिचित थे।

तो आइए देखें भजन 83 पद 18, "जिससे ये जानें कि केवल तू जिसका नाम यहोवा है, सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान हे।" केवल तू... सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है।

दूसरा, भजन 97 जिसमें वह यहोवा को राजा कहता है, और पृथ्वी को मगन होने तथा द्वीपों को आनन्द करने को कहता है। पद 5 में, "पहाड़ यहोवा के सामने, मोम के समान पिघल गए, अर्थात सारी पृथ्वी के परमेश्वर के सामने।" किसके सामने पिघल गए? पृथ्वी के परमेश्वर के सामने। "आकाश ने उसके धर्म की साक्षी दी; और देश–देश के सब लोगों ने उसकी महिमा देखी है। जितने खुदी हुई मूर्तियों की उपासना करते और मूरतों पर फूलते हैं, वे लज्जित हों; हे सब देवताओं, तुम उसी को दण्डवत् करो। सिय्योन सुनकर आनन्दित हुई, और यहूदा की बेटियां मगन हुईं, हे यहोवा यह तेरे नियमों के कारण हुआ है।" पद 9 ध्यान से सुनें, "क्योंकि हे यहोवा तू सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है, तू सारे देवताओं से अधिक महान ठहरा है।"

परमेश्वर देवताओं से महान ही नहीं वह अपने आप में अलग ही है। ध्यान रखें कि यीशु के तुल्य दर्शाया जा रहा है। अतः यीशु भी अपने आप में एक ही है। वह अतुल्य है। वह सारे देवताओं से अधिक महान है। वे सब उसे दण्डवत् करते हैं। भजन 95 उसे पृथ्वी पर परमप्रधान ही नहीं, संपूर्ण सृष्टि पर अनन्त प्रभु कहता है। देखिए भजन 95 पद 3, "क्योंकि यहोवा महान ईश्वर है, और सब देवताओं के ऊपर राजा है। पृथ्वी के गहरे स्थान उसी के हाथ में हैं, और पहाड़ों की चोटियां भी उसी की हैं। समुद्र उसका है और उसी ने उसको बनाया, और स्थल भी उसी के हाथ का रचा है। आओ हम झुककर दण्डवत् करें और अपने कर्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें।"

यीशु को प्रभु कहने का अर्थ आप समझ रहे हैं न? अब देखें भजन 103 पद 19, "यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है, और उसका राज्य पूरी पूरी सृष्टि पर है। हे यहोवा के दूतों, तुम जो बड़े वीर हो, और उसके वचन के मानने से उसको पूरा करते हो उसको धन्य कहो। हे यहोवा की सारी सृष्टि, उसके राज्य के सब स्थानों में उसको धन्य कहो। हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह!"

दो संदर्भ और, भजन 113– आकाश और सब जातियां उसकी स्तुति करते हैं–पद 1–6, "याह की स्तुति करो! हे यहोवा के दोसो स्तुति करो, यहोवा के नाम की स्तुति करो! यहोवा का नाम अब से लकर सर्वदा तक धन्य कहा जाए। उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक, यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है। यहोवा सारी जातियों के ऊपर महान है, और उसकी महिमा आकाश से भी ऊंची है। हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कौन है? वह तो ऊंचे पर विराजमान है। और आकाश और पृथ्वी पर भी दृष्टि करने के लिए झुकता है।"

भजनों में हम देख रहे हैं कि परमेश्वर आकाश, पृथ्वी और संपूर्ण सृष्टि, सब राजाओं से ऊंचा है। अब यशायाह अध्याय 42 पद 8 में परमेश्वर अपने नाम की महिमा के प्रति अत्यधिक गंभीर है। "मैं यहोवा हूं, मेरा नाम यही है, अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूंगा और जो स्तुति मेरे योग्य है वह खुदी हुई मूरतों को न दूंगा।"

अब यशायाह अध्याय 45 पद 21–25 देखें जिस पर फिलिप्पियों 2:9–11 आधारित है, "तुम प्रचार करो और उनको लाओ, हां, वे आपस में सम्मति करें, किसने प्रचीनकाल से यह प्रगट कया? किस ने प्राचीनकाल में इसकी सूचना पहले ही से दी? क्या मैं यहोवा ही ने यह नहीं किया? इसलिए मुझे छोड़ कोई और दूसरा परमेश्वर नहीं है, धर्मी और उद्धारकर्ता परमेश्वर मुझे छोड़ और कोई नहीं है। हे पृथ्वी के दूर दूर के देश के रहनेवालो, तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ! क्योंकि मैं ही परमेश्वर हूं और दूसरा कोई और नहीं है। मैं ने अपनी ही शपथ खाई, धर्म के अनुसार मेरे मुख से यह वचन निकला है और वह नहीं टलेगा, 'प्रत्येक घुटना मेरे सम्मुख झुकेगा और प्रत्येक के मुख से मेरी ही शपथ खाई जाएगी।' लोग मेरे विषय में कहेंगे, केवल यहोवा ही में धर्म और शक्ति है। उसी के पास लोग जाएंगे, और जो उससे रूठे रहेंगे, उन्हें लज्जित होना पड़ेगा। इस्राएल के सारे वंश के लोग यहोवा ही के कारण धर्मी ठहरेंगे, और उसकी महिमा करेंगे।"

यह है पुराने नियम का परिदृश्य– जो हमें "प्रभु" शब्द का महत्त्व समझने में सहायता करता है। प्रभु अर्थात सब के ऊपर अधिकार रखनेवाला। वह आकाश और पृथ्वी के समस्त अधिकारों से ऊंचा है– सब जातियों और शासकों से ऊंचा है। वह अपने नाम की जलन रखता है। सब मनुष्य, सब जातियां उसे दण्डवत् करते हैं। यही प्रभु है।

लूका अध्याय 2 पद 11 में स्वर्गदूत चरवाहों को सन्देश देता है, "आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए उद्धारकर्ता जन्मा है और..." वह क्या है? "मसीह प्रभु है।" इस घोषणा की गंभीरता को समझें। चरनी में जन्मा शिशु संपूर्ण सृष्टि का प्रभु है। वह आकाशमंडल का प्रभु है। वह सब जातियों का प्रभु है। वह स्वार्गिक प्राणियों का प्रभु है। वह सबका, सब स्थानों का प्रभु है। वह सब देवताओं से ऊंचा है। इस कारण वह हमारी संपूर्ण उपासना का केन्द्र है। वह संपूर्ण स्तुति के योग्य है। वह मसीह प्रभु है। अतः जब भजनों में स्तुति का विषय आता है तो वह मसीह यीशु की ही स्तुति है– आकाश में उसकी स्तुति, सर्वोच्य स्थानों में उसकी स्तुति, स्वर्गदूतों उसकी स्तुति करो! स्वर्ग की सेना, उसकी स्तुति करो! सूरज और चांद, उसकी स्तुति करो! चमकते सितारों, उसकी स्तुति करो! सर्वोच्य आकाश और जल, उसकी स्तुति करो! वे सब उसकी स्तुति करें क्योंकि उसके वचन से उनकी रचना हुई और उसने उन्हें यथास्थान सदा के लिए स्थिर

किया। उसका आदेश कभी न टलेगा। पृथ्वी से उसकी स्तुति करो– समुद्र के विशाल जन्तुओं और गहराई के जलचरों, बिजली और ओलो, बर्फ और बादल, उसकी आज्ञाकारी आंधियां, पर्वत और पहाड़ियां, फलों में वृक्ष और देवदार, वनपशु और मवेशी, सूक्ष्म जीव और चिड़ियों, पृथ्वी के राजा और सब जातियां, राजकुमार और शासक, युवक और शिशु, वृद्ध एवं बच्चे सब उसके नाम की स्तुति करें क्योंकि केवल उसी का नाम महान है और उसका वैभव पृथ्वी और आकाश के ऊपर है। यह चरनी में पड़े बालक की पहचान है। वह मसीह प्रभु है। वह हमारी स्तुति के योग्य है। वह सर्वोच्य स्थान पर विराजमान है।

यह एक अद्भुत परिदृश्य है और हमें इस अन्तर्ग्रहण करना है। मानवीय अपमान से ईश्वरीय सम्मान! परन्तु इसका प्रसंग न भूलें। यहां परिदृश्य हमारे उपासना विषय का नहीं है। पौलुस फिलिप्पि के विश्वासियों को पत्र लिख रहा है। वे स्वार्थपरायण हो गए थे और अपने स्वार्थ के निमित्त एक दूसरे से लाभ उठा रहे थे। वे अपने बड़प्पन के लिए जी रहे थे। अतः पौलुस अध्याय 2 पद 3 और 4 में कहता है, "विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।" किसके हित की चिन्ता करें? दूसरों के हित की।

भूलें नहीं! मसीह हमारी उपसना का आधार ही नहीं हमारे जीवन का रूप है। हम यहां फिलिप्पियों अध्याय 2 पद 9–11 में देखते हैं कि मसीह अपमान के स्तर से उठकर परमेश्वर के सम्मान तक ऊंचा उठा और वह हमें दिखाता है कि परमेश्वर की दृष्टि में सफलता का मार्ग मनुष्य के प्रति निःस्वार्थ का है। मैं दोहराता हूं – परमेश्वर की दृष्टि में सफलता का मार्ग निःस्वार्थ का है। हमें इसे अन्तर्ग्रहण करना है। यह फिलिप्पी की संस्कृति के विरुद्ध बात थी। आज भी यह संस्कृति विरोधी विचार है। आज सब कुछ स्वयं के विकास, अधिकार की रक्षा, अपनी स्वयं की रक्षा से ही संबन्धित है परन्तु हमने मसीह में सब त्याग दिया है और दीन बन गए हैं कि सब जाने, मसीह ही परमेश्वर है।

यह धर्मशास्त्र का नमूना है। परमेश्वर के दास निःस्वार्थ दीनता में जीते हैं और परमेश्वर उन्हें महान बनाता है। फिलिप्पियों अध्याय 2, पद 9 में यीशु को किसने ऊंचा उठाया? परमेश्वर ने। जब वह दीन बना और अपना त्याग किया तब परमेश्वर ने उसे ऊंचा किया। यही कहानी हम उत्पत्ति में यूसुफ के साथ देखते हैं। उसने 13 वर्ष सेवा करने और कष्ट उठाने में बिताए, तदोपरान्त परमेश्वर ने उसे महिमान्वित किया। दाऊद भी यद्यपि छोटी आयु में राजा के लिए अभिषेक किया था परन्तु सिंहासन पर बैठने से पूर्व उसने बहुत कष्ट उठाए। हम उसे अपमानित होते देखते हैं और फिर महिमान्वित होते देखते हैं। यीशु की शिक्षाओं में यही विषय था। धन्यवादियों में उसने कहा, "धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं क्योंकि वे स्वर्ग के परमेश्वर को

देखेंगे।" यीशु की संपूर्ण शिक्षाओं में यही था। उसने सदा यही शिक्षा दी कि दीन मनुष्य ऊंचा किया जाएगा। अपने जीवन में भी वह दीन बना–बपतिस्मा लिया, उसकी परीक्षा ली गई और वह हमारी समानता में हो गया कि महिमा पाए। यही ख्रीस्त जयंती का सन्देश है।

हम अपने आप को बड़ा बनाने के लिए, अपनी रक्षा करने के लिए अपना नाम कमाने के लिए नहीं हैं। हम अपना आत्मत्याग करने के लिए हैं कि मसीह की महिमा हमारे द्वारा प्रकट हो। हम अपना महिमान्वन परमेश्वर के हाथों में छोड़ देते हैं। यदि हम आत्मत्याग करें और सब जातियों में उसकी दया एवं उसके अनुग्रह प्रदर्शन का जोखिम उठाएं तो परमेश्वर अपनी महिमा प्रकट करने के लिए हमें ऐसे रूप में उपयोग करेगा जिसकी कल्पना हमने नहीं की होगी। यही ख्रीस्त जयंती का सन्देश है जिसे हमें अन्तर्ग्रहण करना है। वह सर्वोच्य स्थान तक ऊंचा उठाया गया है और वहीं से वह राज करता है।

यीशु के प्रभु होने का दूसरा परिदृश्यः वह सर्वोच्य स्थान में ही राज्य नहीं करता वरन् उसके हाथ में अनन्त सामर्थ्य है। हमने यहूदी विचारधारा के अनुसार यीशु का प्रभु होना देखा है। अब हम यूनानी विचारधारा देखेंगे। अब एक गैर–यहूदी पौलुस के पत्र का पढ़ना सुन रहा है कि परमेश्वर ने यीशु को अति महान किया और हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।

गैर यहूदियों के लिए यह शब्द एक स्वामी का बोध करवाता है। दासों का स्वामी प्रभु कहलाता था। फिलिप्पियों 2:5–11 के संदर्भ में भी यह परिदृश्य अति उत्तम है। वह जो मनुष्य बना और दास का स्वरूप धारण किया, सब वस्तुओं का स्वामी बन गया। यहां कहने का अर्थ यह है कि उसके पास परम सामर्थ्य और निरंकुश अधिकार है मसीह की यही स्थिति हम यहां देखते हैं– उसका अति महान होना। मत्ती अध्याय 28 पद 18 में उसे दिया गया अधिकार कितना दर्शाया गया है? "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार..."

अब प्रश्न यह है कि उसके अधिकार में क्या नहीं है? उसे सब अधिकार प्राप्त है। हम उसकी सत्ता और अधिकार को दो परिप्रेक्ष्यों में देखेंगे।

पहला, उसके पास उद्धार का अधिकार है। फिलिप्पियों अध्याय 2 पद 9 का आरंभ "इस कारण" से होता है अर्थात पद 6 से पद 8 तक जो हुआ उसके कारण– मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। उसे उद्धार प्रदान करने का अधिकार है। वही एकमात्र है जो पाप पर प्रभुता रखता है। संपूर्ण इतिहास में कोई

हुआ है जो पाप पर प्रभुता का दावा करे? संसार के इतिहास में सबसे महान गुरुओं में से किसी ने पाप पर प्रभुता का दावा किया है? कोई नहीं। न तो पाप पर और न ही मृत्यु पर! यीशु के अतिरिक्त कोई है जिसने मृत्यु पर जय पाई है? कोई नहीं। केवल उसी के पास प्रभुता और अधिकार है कि मनुष्य का पाप से उद्धार करे। यही कारण है कि इब्रानियों अध्याय 2 पद 14 में लिखा है कि उसने मानवरूप धारण किया कि उसे पराजित करे जिसके हाथ में मृत्यु का अधिकार है।

मैं जानता हूं कि ख्रीस्त जयंती अनेकों के लिए दुःख का समय भी होता है क्योंकि आपका कोई परिजन इस वर्ष मृत्यु को प्राप्त हो चुका है। मैं आपको स्मरण कराना चाहता हूं कि देहधारण में हमारे पास मृत्यु का प्रभु है। उसे मृत्यु पर अधिकार है। अतः उसके कारण हमें मृत्यु से डरना नहीं है। यह ख्रीस्त जयंती का एक शुभ सन्देश है।

आपको पापों से और कौन बचा सकता है? आप और किसे निहारेंगे कि आपको मृत्यु पर अधिकार दे? कौन कर सकता है? केवल यीशु ही के पास उद्धारक सामर्थ्य है। उद्धारक सामर्थ्य ही नहीं प्रभुता का सामर्थ्य भी है। वह स्वामी है। वह प्रभुता संपन्न है। "वह है" का अर्थ है कि वह सब बातों को वश में रखता है। वह सबके ऊपर प्रभु है। यहां यीशु का यही चरित्र–चित्रण है। वह राजा है। कुलुस्सियों 2:9–10 उसे सिर कहते हैं। वहां लिखा है कि परमेश्वर की संपूर्णता उसमें वास करती है। वह प्रत्येक अधिकार और प्रभुता का सिर है। उसके पास उद्धारक सामर्थ्य और शासन की शक्ति!

यहां मैं एक बात पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि हम उसके उद्धार और प्रभुता को अलग–अलग कर देते हैं। हम कहते हैं, "मैं ने यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण किया है परन्तु अभी उसे प्रभु मानकर समर्पण नहीं किया है।" दूसरे शब्दों में यीशु ने मुझे पापों से बचा लिया है परन्तु वह मेरे दैनिक जीवन का प्रभु नहीं है। हम उसके उद्धारक सामर्थ्य को उसके प्रभुत्व से अलग कर देते हैं। अर्थात मैं उसके उद्धारक सामर्थ्य को स्वीकार करके उसके प्रभुत्व को अनदेखा करता हूं। इसका परिणाम यह होता है कि हम उद्धार पाने के बाद मसीह की प्रभुता से रहित जीवन जीते हैं जो संसार में अन्यों के जीवन से भिन्न नहीं है। हमारे जीवन में मसीह के फल नहीं उत्पन्न होते हैं। वह प्रेमी प्रभु नहीं है परन्तु मेरा उद्धारक है। यह बाइबल का विकल्प नहीं है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में 92 बार यीशु को प्रभु कहा गया है। दो बार उसे उद्धारकर्ता कहा गया है। हम यीशु को प्रभु न मानते हुए उसे उद्धारक नहीं बना सकते हैं।

अतः मैं आपसे कहूंगा कि ख्रीस्त जयंती के अवसर पर उसको गीत गाकर कि वह मसीह है– सबका प्रभु है आदि के द्वारा सरपरस्त बनाने का नाटक न करें जब तक कि आपके जीवन में यह सत्य न हो। परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम मसीह की प्रभुता से खेल न खेलें। यह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। वह प्रभु है। दूसरा, यह हमारा भ्रम है जब हम कहते हैं, "मैं ने यीशु को अपने जीवन का प्रभु बनाने का निर्णय लिया है।" अपने अध्ययन के प्रकाश में इस वाक्य पर ध्यान दें। क्या आपने यीशु को अपना प्रभु बनाने का निर्णय लिया है? वह तो प्रभु है ही। आपके पास इस विषय में चुनाव करने की स्वतंत्रता है ही नहीं। हम कुछ भी सोचें–समझें वह तो प्रभु ही रहेगा। यह एक सत्य है। प्रश्न यह नहीं कि आपने उसे प्रभु बनाया या नहीं बनाया। वह तो प्रभु है ही। प्रश्न तो यह है, "क्या आपने उसकी प्रभुता के अधीन अपना जीवन समर्पित किया है?" फिलिप्पियों अध्याय 2 पद 9–11 से एक प्रश्न उभरता है, क्या आपने उसकी प्रभुता के अधीन घुटना टेका है? क्योंकि धर्मशास्त्र का सत्य यह है कि जो स्वर्ग में, और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे है, वे सब यीशु के नाम पर घुटने टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है। अब प्रश्न यह है कि घुटना तो टेकना ही है परन्तु आप अभी घुटना टेकेंगे या बहुत देर हो जाने पर घुटना टेकेंगे? ख्रीस्त जयंती हमारे सामने यही प्रश्न लाती है, "क्या आपने उसकी प्रभुता के अधीन घुटना टेका है? यह नहीं, कि आपने मसीह को ग्रहण किया है या नहीं, न कि आपने प्रार्थना की है या नहीं, न ही यह कि आपने मसीह में विश्वास करके –ख्रीस्त जयंती का सन्देश स्वीकार किया है। दुष्टात्माएं भी ख्रीस्त जयंती को स्वीकार करती हैं। क्या आपने उसकी प्रभुता के अधीन घुटना टेका है? यही मूल प्रश्न है, इसी मूल प्रश्न पर आपका अनन्त जीवन आधारित है। मेरा कहने का अर्थ है– रोमियों अध्याय 10 पद 9– यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।"

यह सुसमाचार है। उसकी प्रभुता के अधीन घुटना टेकें। उसे प्रभु कहकर अंगीकार करें। इसी पर हमारे जीवन आधारित हैं। इसी पर हमारा अनन्त जीवन आधारित है। क्या हमने उसकी प्रभुता के अधीन घुटना टेका है? अतः हमें निर्णय लेना है कि हम आज घुटना टेकें जिसका प्रतिफल उद्धार है। यदि हम घुटना टेकें और यीशु को प्रभु कहकर अंगीकार करें, उसकी प्रभुता के अधीन समर्पित हो जाएं तब हम उसके अनुग्रह और उसकी दया से उद्धार पाते हैं। दूसरी ओर विकल्प यह है कि इस जीवन के अन्त होने तक प्रतीक्षा करें। बाद में तो हमें घुटना टेकना ही होगा। इसका प्रतिफल दण्ड होगा।

डेव, आप कहना क्या चाहते हैं? मेरे विचार में यीशु ने कहा है, "मैं संसार में दण्ड की आज्ञा देने नहीं उद्धार देने आया हूं। संसार को अनुग्रह और दया दिखाने?" यह सर्वोचित है। वह संसार में उद्धार के लिए

आया था। रोमियों अध्याय 8 पद 1 में लिखा है, "जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं, परन्तु वे जो उसकी प्रभुता के अधीन नहीं वे पापों में लिप्त परमेश्वर समक्ष खड़े होते हैं क्योंकि उनके पास पाप मोक्षक नहीं है और पाप का दण्ड पाएंगे।"

यह अत्यधिक गंभीर बात है। अतः हम ध्यान दें कि हमने उसकी प्रभुता के अधीन घुटना टेका है या नहीं? यह अनदेखा करने के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। मैं आज आपको आमंत्रित करता हूं कि आप प्रभु के समक्ष घुटने टेकें। प्रभु भोज के द्वारा हम मसीह की मृत्यु पर ध्यान देते हैं जो उसने हमारे लिए सही, उसका पुनरुत्थान और पाप एवं मृत्यु पर उसकी विजय का ध्यान करते हैं। मैं चाहता हूं कि आप ध्यान करें कि उसे आपके जीवन का प्रभु होने का अर्थ क्या है और आपका जीवन उसकी प्रभुता में कहा है? यदि आप यह नहीं कह सकते कि आप ने उसकी प्रभुता के समक्ष घुटने टेक दिए हैं तो आप मेरे साथ कहें, "मैं अंगीकार करता हूं कि तू प्रभु है। तू मेरे जीवन का परमेश्वर, शासक और स्वामी है और मुझे पापों की क्षमा हेतु तेरी आवश्यकता है। मैं तुझ में विश्वास ही नहीं अपने संपूर्ण जीवन से तुझ पर भरोसा रखूंगा।"

प्रिय परमेश्वर, हम तेरे समक्ष घुटने टेक कर अंगीकार करते हैं कि तू ने यीशु को वह नाम दिया है जो सब नामों से ऊंचा है। वह संपूर्ण सृष्टि का प्रभु है– आकाशमण्डल, पृथ्वी, और हमारे जीवन का प्रभु है। हे परमेश्वर मैं इस अवसर पर प्रार्थना करता हूं कि मनुष्य तुझे प्रभु मानकर तेरे उद्धार के उपहार को स्वीकार करे। मैं प्रार्थना करता हूं कि तू हमारे जीवन अपनी प्रभुता के अधीन कर ले। हम प्रार्थना करते हैं कि तेरी मृत्यु और पुनरुत्थान की सच्चाई, तेरे व्यक्तित्व की सच्चाई कि तू कौन है, हमारे मन में नवीन, अर्थपूर्ण एवं जीवन परिवर्तन स्वरूप प्रवेश करे। यीशु के नाम में आमीन।

अपने अध्ययन के अन्तिम भाग में हम देहधारण का उपसंहार देखेंगे। वह सर्वोच्य पद पर बैठा राज कर रहा है। उसके पास अनन्त सामर्थ्य है। वह हम सब के जीवन का प्रभु है। वही नियंत्रण करता है। यह अच्छा ही है कि वह नियंत्रण में है क्योंकि संपूर्ण अधिकार और सामर्थ्य उसी के पास हैं। वह जगत के सृजनहार के सामर्थ्य द्वारा अपने लोगों की रक्षा करता है और उनकी चौकसी करता है। यह अति भला है कि वह प्रभु है।

यीशु प्रभु है। इसके अन्तिम दो अर्थ! तीसरा, वह जगत द्वारा स्तुति के योग्य है। सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। यह पुराने नियम की आराधना का परिदृश्य है। इसका अर्थ है स्तुति, सम्मान, महिमा और

उपासना के योग्य होना जिसके सामने खड़े होने का साहस न हो। अतः घुटने टेक दें। "हर जीभ अंगीकार कर ले" अर्थात सबके सामने कहना कि मसीह यीशु प्रभु है।

"स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे इसका क्या अर्थ है?" इसका अर्थ खोजने के लिए मैं आपको बाइबल के विद्वानों की परिभाषाएं पढ़ सकता हूं परन्तु इस सबका अध्ययन करने के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि इसका सरल सा अर्थ है, हर एक जन। ठीक? तो हम यही मानकर चलेंगे। हम सब इसमें आते हैं। इसका अर्थ है, स्वर्ग और पृथ्वी के नीचे प्रत्येक स्वर्गदूत जो मसीह की उपासना करते हैं और उसे दण्डवत् करते हैं। वह प्रत्येक स्वर्गदूत की स्तुति के योग्य है। इसका अर्थ है पवित्र स्वर्गदूत और शैतान एवं उसके स्वर्गदूत सब मसीह यीशु के समक्ष घुटने टेकें। वह प्रत्येक स्वर्गदूत की स्तुति के योग्य है।

स्वर्गदूत ही नहीं, प्रत्येक मनुष्य–जीवित या मृतक। संपूर्ण इतिहास में संपूर्ण पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य घुटना टेके और अंगीकार करे। वह प्रत्येक स्वर्गदूत, प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक भाषाभाषी की उपासना के योग्य है। "हर एक जीभ अंगीकार कर ले।" इसका अर्थ है प्रत्येक मनुष्य का मुंह परन्तु नये नियम में यह शब्द सब भाषाओं, जातियों और कुल को संबोधित करता है। मैं कुछ संदर्भ देता हूं जो "भाषा" शब्द की व्याख्या करते हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में सात बार यह शब्द "भाषा" आया है। हम इनमें से दो संदर्भ देखेंगे। अध्याय 5 पद 11 यीशु का गुणगान है, "जब मैं ने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिनकी गिनती लाखों और करोड़ों की थी, और वे ऊंचे शब्द से कहते थे, 'वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ्य और धन और ज्ञान और शक्ति और आदर और महिमा और धन्यवाद के योग्य है!' फिर मैं ने स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उनमें है, यह कहते सुना, 'जो सिंहासन पर बैठा है उसका और मेम्ने का धन्यवाद और आदर और महिमा और राज्य युगानुयुग रहे।' और चारों प्राणियों ने आमीन कहा, और प्राचीनों ने गिरकर दण्डवत किया।"

वह सब भाषाओं से सब मनुष्यों की स्तुति के योग्य है। आपने पद 9 में देखा कि लिखा है, "तू ने वध होकर अपने लहू से हर एक कुल और भाषा और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है।"

यही शब्द फिलिप्पियों अध्याय 2 पद 10 और 11 में आया है। दूसरा संदर्भ है प्रकाशितवाक्य अध्याय 7 पद 9, "इसके बाद मैं ने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से एक ऐसी

बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, श्वेत वस्त्र पहने और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिए हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है।"

प्रत्येक स्वर्गदूत, प्रत्येक मनुष्य, प्रत्येक भाषा एक दिन सिंहासन के समक्ष दण्डवत् करके स्तुति गान गाएगी। वैश्विक स्तुति, मसीह का अनन्त मान, हमें, कलीसिया को प्रेरित करते हैं। हम क्यों संपूर्ण त्याग के साथ स्वयं को मसीह के दूतकार्य में समर्पित करें? मसीह के अनन्त मान के कारण और क्योंकि वह वैश्विक उपासना के योग्य है। हम क्यों पृथ्वी के छोर तक मसीह की महिमा के प्रसारण हेतु क्यों जोखिम उठाते हैं? क्योंकि असंख्या जन हैं जिनमें से प्रत्येक को यीशु का स्तुतिगान करना है। असंख्या आदिवासी जो आत्माओं की पूजा करते हैं उन्हें परमेश्वर का ज्ञान नहीं है। यीशु उनकी उपासना के योग्य है। असंख्य मनुष्य बहुदेववाद में लिप्त हैं। यीशु सबसे ऊपर है। वही एकमात्र उनकी उपासना के योग्य है। असंख्य समाजवादी हैं असंख्य नास्तिक हैं परन्तु एक परमेश्वर है जिसका नाम यीशु है। वह उनकी उपासना के योग्य है। हम दुर्गम स्थानों में क्यों जाते हैं? हम खतरनाक स्थानों में क्यों जाते हैं। क्योंकि वे सब यीशु की उपासना करेंगे। वह वैश्विक उपासना के योग्य हैं। वही हमारे लिए क्रूस पर मरा था।

अब आप कहेंगे, "डेव, आपने ख्रीस्त जयंती को दूतकार्य में बदल दिया।" यही तो मुख्य बात है! यीशु उपासना के योग्य है।

अन्तिम बात, वह अनन्त उद्देश्य की पूर्ति करता है। इससे न चूकें। फिलिप्पियों अध्याय 2 में परमेश्वर ने उसे अति महान किया और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। परमेश्वर ने उसे अति महान क्यों किया? मैं चाहता हूं कि– आप इस प्रश्न पर विचार करें। इसमें परमेश्वर का परम उद्देश्य था कि प्रत्येक घुटना उसके सामने झुके। नहीं, नहीं और आगे बढ़ें, "हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।" परमेश्वर ने उसे अति महान क्यों कया? पिता परमेश्वर ने यीशु को अति महान किया कि वह उसके नाम की महिमा करे। किसके नाम की? पिता परमेश्वर की। यही परम उद्देश्य है जिसके निमित्त वह इस दुनिया में आया, क्रूस पर जान दी, मृतकों में से जी उठा, स्वर्ग में चढ़ गया जिससे कि पिता परमेश्वर का नाम महिमान्वित हो, पिता परमेश्वर की महिमा के निमित्त। यूहन्ना अध्याय 1 पद 14 में लिखा है, "हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसे पिता के एकलौते की महिमा।"

वचन देहधारी हुआ इसका यही अर्थ है। अतः हम यहां ख्रीस्त जन्म का परम उद्देश्य देखते हैं। हम पिता की महिमा का प्रकाशन उसमें देखते हैं। यह मसीह का चरित्र–चित्रण है। अतः ख्रीस्त जयंती के बारे में

सोचना वास्तव में पिता परमेश्वर की महिमा को मसीह में देखते हैं। हम उसकी महिमा को देखते हैं– यूहन्ना 1:14, हम उसकी महिमा का प्रतिबिम्ब देखते हैं। हम उसकी महिमा से अभिभूत हो जाते हैं। यूहन्ना अध्याय 12 में यीशु क्रूस पर जाने से पूर्व कहता है, "इसलिए अब मैं क्या कहूं? 'हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा?' नहीं, क्योंकि मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं। हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।"

यूहन्ना 12:28, "मैं ने उसकी महिमा की है और फिर भी करुंगा।" यूहन्ना अध्याय 13, पद 31, "अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई है, और परमेश्वर की महिमा उसमें हुई है।"

परिदृश्य यह है। हम ख्रीस्त जयंती पर मसीह में पिता की महिमा के प्रकाशन को देखते हैं परन्तु हम यहीं रुक नहीं जाते। हम पिता की महिमा के साथ उसके फिर लौट आने को देखते हैं। हम इससे नहीं चूक सकते। इसमें सन्देह नहीं कि ख्रीस्त जयंती मसीह के पृथ्वी पर आने का उत्सव है परन्तु हमारे आनन्द का एक और कारण है कि वह अपने लोगों के लिए फिर से आएगा। वह परमेश्वर की महिमा को परिपूर्णता में प्रकट करेगा। 1 करिन्थियों अध्याय 15 में लिखा है कि सब कुछ उसके पांवों तले किया गया है कि वह सर्वेसर्वा हो। उसी अध्याय क अन्त में लिखा है कि तुरही के फूंके जाने पर अन्तिम पहले होंगे और हम मसीह के साथ जी उठेंगे और कहेंगे, हे मृत्यु तेरी जय कहां, तेरा डंक कहां है? पाप और मृत्यु पर जय प्राप्त की जा चुकी है। प्रभु यीशु मसीह जो फिर से आएगा उसे धन्यवाद। 1 कुरिन्थियों अध्याय 16, पद 22 में पौलुस कहता है, "हे हमारे प्रभु आ।"

ख्रीस्त जयंती पर हम पीछे देखने की अपेक्षा भविष्य को निहारें– उसके पुनःआगमन के सत्य को। वह आपके लिए और मेरे लिए फिर आएगा। वह मृत्यु पर जयवन्त है। मृत्यु न तो आपके लिए और न मेरे लिए अर्थ रखती है क्योंकि प्रभु की प्रतिज्ञा है कि वह फिर आएगा। हम सदा सर्वदा उसके साथ होंगे। यह देहधारण का सौंदर्य है।

हे परमेश्वर, हमारी आंखें खोल कि हम तेरी महिमा के विस्तार को देख पाएं। हमारे मन के द्वार खोल कि हमें तेरे अनुग्रह का बोध हो। हे परमेश्वर, हमारे मुंह खोल कि हम तेरे सुसमाचार के आश्चर्य का आज, कल और संपूर्ण 2011 तेरे सुसमाचार की उद्घोषणा करें।

मेरे विचार में फिलिप्पियों अध्याय 2 पद 9–11 के प्रकाश में सबसे उचित काम होगा कि हम उसकी स्तुति करें, उसे सम्मान दें और उसका महिमान्वन करें। अतः मैं प्रार्थना करुंगा और हम खड़ें हो जाएं और उसकी

महानता गुणगान करें। हम उसे प्रभु कहेंगे, महान कहेंगे और सामर्थी कहेंगे। हम अपना ध्यान और मन का अनुराग पूर्ण रूप से उससे जोड़ेंगे और पूरे मन से गाएंगे।

हे परमेश्वर, हम तेरी स्तुति करते हैं। हम तेरी मुक्ति योजना के लिए तेरी स्तुति करते हैं कि तू ने अपने पुत्र को भेजा और उसे अति महान किया। अतः हम घुटने टेककर तुझे प्रभु कहकर अंगीकार करते हैं। हम तेरी पुनः आगमन के लिए ललकते हैं। हम देखते हैं कि तू ने पृथ्वी पर आकर क्या किया और भविष्य को निहारते हैं, कि हे परमेश्वर, तू पुनः आएगा तो क्या करेगा? हे परमेश्वर, हम प्रार्थना करते हैं कि उस दिन तक हमारे जीवन के सब कामों से हमारे प्रभु की महिमा प्रकट हो जिससे कि हमसे यह कहा जाए, आपने हमारे मध्य पिता परमेश्वर की महिमा के निमित्त काम किया। यीशु के नाम में हम प्रार्थना करते हैं, आमीन!